

पर्यावरण की कहानी हमारी जुबानी

डॉ अनुज कुमार, आलोक कुमार मौर्य, शालिनी सुन्दरम् एवं एस. एस. प्रियदर्शिनी पाण्डा

परिचय:

पर्यावरण ईश्वर निर्मित अधिवास है जहाँ हम पैदा होते हैं, बढ़ते हैं, खेलते हैं, प्यार करते हैं, और जीते हैं। ये मानव जाति अपनी मौलिक ज़रूरत- भोजन, कपड़ा, और घर की पूर्ति करते हैं। वे भोजन के लिए पेड़ से फल, जानवर से मांस और नदी से जल लेते हैं। वे कपड़े के रूपमें पेड़ से छाल और जानवर के छाल का प्रयोग करते थे और आश्रय के लिए गुफा में रहे। जिसकी वजह से पर्यावरणसंतुलित था।

हजारों साल बाद मनुष्य सभ्य हुआ और उन्होंने अपने जीवन शैली बदलने की कोशिश की। वे प्राकृतिकसंसाधन का उपयोग करने के बजाय इसे बर्बाद कर रहे जिसके वजह से हमारा पर्यावरण बहुत तेजी से बदल रहा है।



पर्यावरणप्रदूषण आज इस धरती पर मानव जाति के लिए सबसे बड़ा खतरा है। पर्यावरणमेंपृथ्वी, जल, हवा, वृक्ष और पशु-पक्षि होते हैं। यदि हमने उन्हें प्रदूषित किया तो मनुष्य और प्रकृति को आस्तित्व बाधित होगा।

ये सच है कि पेड़ों को तेजी से काटा जा रहा है हमारी पृथ्वीगर्म होती जा रही है। अगर प्रदूषण इसी तरह जारी रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी धरती उबलती हुई होगी और यह मानव जाति के विनाश का कारण बनता जा रहा है।

शुद्ध वायु हमेशा साँस लेने के लिए आवश्यक है। धुआं वायु को प्रदूषित करता है यह वायु प्रदूषण की जड़ है। कारखाना, रसोईघर और मोटर गाड़ियों से निकलने वाली धुआं जो कि कार्बनमोनोआक्साइड, कार्बनडाइऑक्साइड, मिथेन इत्यादि का मिश्रण है ये सभी जहरीली गैसें हैं। इसके वजह से फेफड़े के कैंसर, टी.बी. इत्यादि होती है जो कि जीवन का बोझ बन जाता है। इस वायु प्रदूषण को रोकने के लिए दिल्ली सरकार ने एक छोटी सी पहल की थी 16 अक्टूबर 2021 में जो इस तरह था “रेड लाइट ओन और गाड़ि ओफ”।

ध्वनि प्रदूषण का समस्या निरंतर बढ़ने वाली समस्या है ध्वनि प्रदूषण के अनेक स्रोत हैं जो घर के अन्दर और बाहर दोनों ही जगह हैं इसमें रडियो, टेलीविजन, जनरेटर, लाउडस्पीकर का विवेकहीन प्रयोग, मोटरगाडियाँ इत्यादि प्रदूषण के स्रोत हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ध्वनि की उच्चता का स्तर दिन में 45dB तथा रात्रि में 35 dB निश्चित किया है। तीव्र ध्वनि से जन्तुओं के हृदय, मस्तिष्क एवं यकृत को भी हानि पहुंचती है। इससे उनका तंत्रिका तंत्र खराब हो जाता है और वे खतरनाक बन जाते हैं।

पूरे विश्व में विभिन्न खतरनाक रसायन और जैविक एजेंट केद्वारा नदी और समुद्र लगातार प्रदूषित हो रहा। कई नदियों और समुद्रों में मिल और कारखानों से बहुत हानिकारक अपशिष्ट जल का निर्वहन किया जाता है। यह वास्तव में बहुत हंसी की बात है हम भारतीय जिस नदी की पानी को पवित्र मानते हैं उन्हें भी प्रदूषित कर दिए हैं। इन सब की वजह से जल जीव पर भी बहुत बड़ा प्रभाव पड़ रहा है।

कृषि में उत्पादन बढ़ाने के लिए आम तौर पर रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक का प्रयोग कर रहे हैं। आज सब्जी और फल काफी हानिकारक हो रहे हैं इनमें कीटनाशक और कीटनाशकों का जहर होता है। अपने सब्जी और फल में रहने वाली इस तरह की जहर को कम करने के

लिए अगर हम जैविक खेती करना शुरू कर दें तो हम खुद को भी स्वस्थ रख सकते हैं और मिट्टी को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं।

इन सभी प्रदूषण को रोकने के लिए (रोकने के लिए कहना गलत होगा हम ये कहे कम करने के लिए तो ठिक होगा) ऑटोमोबाइल का उचित रख रखाव, शोर अवरोधक पदार्थका प्रयोग करें और सप्ताह में एक दिन अपनी गाड़ी न चलाए।

ताजी हवा न सिर्फ हमें प्रदूषण से होने वाली बीमारियों से बचाती है बल्कि यह हमारे तन-मन को भी फ्रेश बनाए रखती है। ऐसे कई पौधे हैं जो हमारे घर में ऑक्सिजन की मात्रा बढ़ा सकते हैं। क्या आपको पता है कि आपके घर में भी प्रदूषण है जिससे बचने के लिए आप कुछ पेड़-पौधे लगाकर घर में फैले वायु प्रदूषण को कम कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ पौधे हैं - ऐलो वेरा, मनी प्लांट, ग्रीन तुलसी, बोस्टोन फर्न, गोल्डन

कैक्टस, अशोक का पेड़ इत्यादि पौधे वायु साफ करने के लिहाज से काफी अच्छे हैं। नासा की क्लीन एयर स्टडी में इन सभी पौधों को प्रदूषण कम करने के लिहाज से काफी असरदार पाया गया है। ये वातावरण के तापमान में 2-4⁰से. कम करते हैं।

हम हमेशा ये कहते हैं कि प्रदूषण को सरकार रोक नहीं पा रही हैं। सरकार पूरे देश में 1 है और हम 1,393,409,038 लोग हैं अगर मंत्री एक दिन में एक पेड़- पौधे लगाएंगे तो हम उस एक दिन में 1,393,409,038 पेड़- पौधे लगा सकते हैं। प्रकृति से छेड़-छाड़ न करें केवल हम हमारे पर्यावरण की देखभाल कर सकते हैं। प्रकृति से छेड़-छाड़ का ही नतीजा ये कोरोना है क्या आप अपने भविष्य में इससे भी बड़े महामारी चाहेगें अगर नहीं तो अपने पर्यावरण की देखभाल करें।

NEW ERA
AGRICULTURE MAGAZINE

डॉअनुजकुमार, परियोजना प्रबंधक (आर्गेनिक फार्मिंग), उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन
आलोक कुमार मौर्य, भाकृअनुप – भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर
शालिनी सुन्दरम्, ऐग्रोनोमिस्ट, पोनिक्स ग्रीन
एस. एस. प्रियदर्शिनी पाण्डा, छात्रा, कृषि स्तानक, आर आई ऍम टी यनिवर्सिटी, पंजाब